

123

ISSN 2231-3885

संवेद

मार्च, 2021 मूल्य : ₹ 200

फणीश्वर नाथ रेणु
शताब्दी स्मरण



सम्पादक : किशन कालजयी

इस अंक में सम्पादकीय सहयोग

प्रकाश देवकुलिश

रत्नेश कुमार सिन्हा

आशा शर्मा

नीरू अग्रवाल

प्रबन्ध सम्पादक : अतुल माहेश्वरी

सम्पादकीय सम्पर्क

बी-3/44, सेक्टर-16,

रोहिणी, दिल्ली-110089

मो. : +918340436365

samvedmonthly@gmail.com

आवरण चित्र : संजीव शाश्वती

एकमात्र वितरक

नयी किताब प्रकाशन

1/11829, प्रथम मंजिल, पंचशील गार्डन,

नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

फोन : 011-22825606, 9811388579

nayeekitab@gmail.com

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक कुमकुम कुमारी द्वारा

बी-3/44, सेक्टर-16, रोहिणी, दिल्ली-110089

से प्रकाशित और लक्ष्मी प्रिंटर्स, 556, जीटी रोड,

शाहदरा, दिल्ली-110032 से मुद्रित।

इस अंक का मूल्य : दो सौ रुपये

वार्षिक सदस्यता : सात सौ रुपये

रजिस्टर्ड डाक से-एक हजार रुपये

आजीवन : दस हजार रुपये

सम्पादन : अवैतनिक

लेखकों के व्यक्त विचारों से सम्पादक या प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।

पत्रिका से सम्बन्धित समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अन्तर्गत विचाराधीन।



विभा ठाकुर : दबंग रतनी की कथा (नैना जोगिन)	/ 300
कविता : एक प्रेमकथा के विद्यापति (एक लोकगीत के विद्यापति)	/ 305
जीतेन्द्र बर्मा : पहली कहानी बरगद के पास (बटबाबा)	/ 309
कमलेश बर्मा : मन के उलझाव की अभिव्यक्ति (रिखाएँ : वृत्तचक्र)	/ 311
अनीश अंकुर : संघर्ष की जद्दोजहद और सौन्दर्य की चाहत (लाल पान की बेगम)	/ 315
सोनी पाण्डेय : मानव सभ्यता के स्याह पक्ष की कथा (न मिटने वाली भूख)	/ 320
ऋषि कुमार : पलायन के विरोध में (उच्चाटन)	/ 324
आकांक्षा पारे काशिव : समर्थ पात्रों की कहानी (अच्छे आदमी)	/ 328
अभिषेक कश्यप : एक दिन फिर आना (आदिम रात्रि की महक)	/ 331
प्रतिभा प्रसाद : अन्धकार एवं मौन का विद्रोहात्मक स्वर (खण्डहर)	/ 334
मनोज कुमार सिंह : विकास की मशाल (पंचलैट)	/ 338
आशुतोष : जीवन के वास्तविक ताप की कहानी (बीमारों की दुनिया में)	/ 343
निशान्त : सामूहिक पाठ के लिए एक जरूरी कहानी (इतिहास, मजहब और आदमी)	/ 347
अमित मनोज : गोआनीज लेडी के भीतर की दुनिया (लफड़ा)	/ 352
किंगसन सिंह पटेल : कैदे दास्तां (आजाद परिन्दे)	/ 356
संजय राय : कल्पना की दृष्टि सम्मत उड़ान (अकल और बैस)	/ 359
नवनीत नीरव : एक सांगीतिक प्रेम कहानी (प्राणों में बुले रंग)	/ 363
राजीव कुमार : सामाजिक मरम्मत की मुकम्मल कारीगिरी (रसूल मिस्तरी)	/ 366
अमित कुमार सिंह : एक नदी और उसके दो पाटों के उजड़ने-बसने की कहानी (रखवाला)	/ 374
मनीष : वीराने को बसाने की दास्तान (रोमांस शून्य प्रेम कथा की एक भूमिका)	/ 379
अंकित नरवाल : जीवन की धूसर छवियों का चित्रण (ना जाने केहि वेल में)	/ 384
नीलमणी भारती : कहानी की तलाश में (एक अकहानी का सुपात्र)	/ 387
नीलम सेन : छद्म का प्रतिकार (तब शुभ नामे)	/ 391

रेणु का व्यक्तित्व और कृतित्व

आनन्द कुमार : सृजन और संघर्ष का समावेशी व्यक्तित्व	/ 396
सुरेन्द्र नारायण यादव : कृषि के प्रवीण चिन्तक	/ 402
भारत यायावर : रेणु रंग के दो प्रसंग	/ 412
अरविन्द कुमार : रेणु की कहानियों का आरम्भिक काल	/ 416
राजेश कुमार : मिरदंगिया का खेल तमाशा	/ 423
योगेन्द्र आहूजा : रेणु जी की छाप	/ 429
शिवदयाल : रेणु की वैचारिक चेतना	/ 435



जीवन के वास्तविक ताप की कहानी (संसारों की दुनिया में)

फणीश्वर नाथ रेणु हिन्दी कथा जगत का अविस्मरणीय नाम है। प्रेमचन्द के बाद हिन्दी के सबसे ज्यादा चर्चित और प्रशंसित कथाकार हैं रेणु। विशेष रूप से अपनी कथा भाषा, संगीत की अनुगूँज और परिवेश के सजीव चित्रण के लिहाज से वे हिन्दी के अनोखे कथाकार हैं। वे कहानियाँ बुनते हैं। बुनावट भी ऐसी गड़बड़ कि क्या मजाल कि एक भी सूत कहीं झर-उधर हो जाए। कहानी की भाषा और संरचना पर इस तरह का अख्तियार विरल है।

प्रेमचन्द के बाद हिन्दी कहानी में गाँव गैरहाजिर होता जा रहा था, कहानी मध्यवर्ग के जीवन और उसकी दुविधाओं के इर्द-गिर्द केन्द्रित होती जा रही थी। मुख्यतः 'नयी कहानी' के दौर में तो हिन्दी कहानी का मुख्य 'फोकस' मध्यवर्ग, शहरीकरण, सम्बन्धों का द्वन्द्व, बेरोजगारी, मोहभंग पर ही हो गया था। ऐसे में रेणु ने गाँव-जवार की अपनी कहानियों के माध्यम से हिन्दी कहानी के परिवेश को अधिक संवादी, अधिक विविधतापूर्ण बनाया। साथ ही रेणु की कहानियों के माध्यम से हिन्दी कहानी में एक बार फिर कथा रस की भी वापसी हुई, जो आगे चलकर हिन्दी कहानी के लिए शुभ साबित हुई।

रेणु की पहली कहानी 'बट बाबा' 1944 में प्रकाशित हुई थी। तो 1944 से लेकर 1955 तक का समय उनके कहानी लेखन का पहला चरण है। इस दौरान उन्होंने लगभग दर्जन भर कहानियाँ लिखीं। 1955 में उनकी 'रसप्रिया' कहानी प्रकाशित हुई। आज हम जिस कहानीकार रेणु को जानते हैं और प्यार करते हैं, उस रेणु की वास्तविक धमक इसी कहानी में महसूस की गयी थी। सन् 55 से लेकर सन् 65 तक के समय को रेणु के कहानी लेखन का दूसरा चरण माना जा सकता है। उनकी सर्वोत्तम कहानियाँ—'रसप्रिया' के साथ ही 'पंचलाईट', 'ठेस', 'लालपान की बेगम', 'तीसरी कसम' आदि इसी दौर की हैं। रेणु की कहानियों का तीसरा दौर 1965 के बाद शुरू होता है।

हिन्दी कथा आलोचना में रेणु के कहानीकार व्यक्तित्व की चर्चा का आधार भी दूसरे